SHODHPATRA: INTERNATIONAL JOURNAL OF SCIENCE AND HUMANITIES
E-ISSN: 3048-6041 | Volume- 3, Issue- 4 | April 2026

राजस्थान राज्य के टोंक क्षेत्र में स्थानीय पर्यटन के विकास में बीसलपुर बांध परियोजना के महत्त्व का भौगोलिक अध्ययन

अनिल वर्मा [1], डॉ० अभिषेक श्रीवास्तव [2]
[1] शोधार्थी, भूगोल विभाग, संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा, राजस्थान
[2] सहायक आचार्य, भूगोल विभाग, संगम विश्वविद्यालय, भीलवाड़ा, राजस्थान

शोध सारांश

प्रस्तुत शोधपत्र राजस्थान राज्य के टोंक क्षेत्र, में स्थानीय पर्यटन के विकास में यहाँ स्थित बीसलपुर बांध परियोजना के महत्त्व के संबन्ध में किए गए भौगोलिक अध्ययन पर केन्द्रित है। शोधकर्त्ताओं द्वारा टोंक क्षेत्र के अंतर्गत बीसलपुर बांध परिसर में स्थित प्रमुख स्थलों को शामिल किया गया है जो कि विशुद्ध रूप से देवली कस्बे के अंतर्गत आते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र में बीसलपुर बांध परिसर में स्थित पर्यटन इकाइयों, पर्यटन विकास से जुड़ी संभावनाओं, पर्यटन विकास में आ रही चुनौतियों एवं संबन्धित सुझावों को स्थान दिया गया है। निर्धारित विषय के अनुरूप शोधक्षेत्र में अध्ययन हेतु शोधकर्त्ताओं द्वारा प्राथमिक एवं द्वितीयक दोनों ही प्रकार के आँकड़ों को आधार बनाया गया है। प्राथमिक आँकड़ों के लिए शोधकर्त्ताओं द्वारा टोंक क्षेत्र में पर्यटन गतिविधियों में संलग्न कारोबारियों, स्थानीय निवासियों एवं पर्यटकों से साक्षात्कार के माध्यम से जानकारी जुटाई गई है। साक्षात्कार के अतिरिक्त शोधकर्त्ताओं द्वारा अवलोकन पद्धति को भी प्रयुक्त किया गया है। द्वितीयक आँकड़ों के अंतर्गत शोधकर्त्ताओं द्वारा पूर्व में प्रकाशित शोधपत्रों एवं सरकारी रिपोर्ट्स को आधार बनाया गया है।

संकेताक्षरः टोंक क्षेत्र, बीसलपुर बांध परियोजना, पर्यटन विकास, चुनौतियाँ और सुझाव, भौगोलिक अध्ययन

परिचय

बीसलपुर बांध परियोजना टोंक जिले की देवली तहसील में बनास नदी पर निर्मित एक बहूद्देशीय परियोजना है। यह बनास नदी के जल को रोक कर बनाया गया एक गुरुत्वाकर्षण बांध है। गुरुत्वाकर्षण बांध वे बांध होते हैं जिनके निर्माण में पत्थर की चिनाई द्वारा एक मोटी जलरोधी दीवार का निर्माण किया जाता है। इस बांध का नामकरण अजमेर के चौहान शासक विग्रहराज चतुर्थ अथवा बीसलदेव के नाम पर किया गया है (माली, 2025)।

बहूद्देशीय परियोजना होने के नाते बीसलपुर बांध पेयजल, सिंचाई तथा मत्स्यन क्षेत्रों में अपनी महती भूमिका का निर्वहन करता आया है किन्तु इन क्षेत्रों के अतिरिक्त एक ऐसा क्षेत्र भी है जो कि बांध की भूमिका से अछूता रह गया है, वह है पर्यटन क्षेत्र। पर्यटन एक मौन उद्योग है एवं वर्तमान समय में राजस्थान सरकार के लिए सर्वाधिक आय अर्जक उद्योगों में से एक है। पर्यटन के क्षेत्र में व्यापक सुधार करते हुए राजस्थान सरकार ने मो० यूनुस समिति की सिफारिशों के आधार पर वर्ष 1989 में पर्यटन को उद्योग का दर्जा प्रदान किया था (राजस्थान पर्यटन विभाग, 1989)। क्षेत्रफल के लिहाज से देखा जाए तो देश का सबसे बड़ा राज्य होने के नाते राजस्थान के भौगोलिक, ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक परिदृश्यों में काफी विविधताएँ दिखाई पड़ती है। जहाँ पश्चिमी राजस्थान शुष्क रेगिस्तान है तो वहीं पूर्वी राजस्थान तुलनात्मक रूप से नदीय संस्कृति का परिचायक है। पश्चिमी राजस्थन के ऐतिहासिक विरासत स्थान

Published: 29 April 2026
DOI: https://doi.org/10.70558/SPIJSH.2026.v3.i4.45710
Copyright © 2026 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License (CC BY 4.0).

एवं उनकी वास्तुकला पूर्वी राजस्थान की वास्तुकला की तुलना में पूर्णतया भिन्न दिखाई पड़ती हैं। इसके अतिरिक्त पश्चिमी राजस्थान के बांध भी पूर्वी राजस्थान के बांधों की तुलना में छोटे आकार के एवं कम जल धारण क्षमता वाले हैं। बीसलपुर बांध की कुल जल भराव क्षमता 315.50 मी. है (कृषि विभाग, राजस्थान सरकार, एनडी, पृ. 11)। इस दृष्टि से यह मध्यवर्ती राजस्थान का सबसे बड़ा बांध है। मध्यवर्ती राजस्थान का सबसे बड़ा बांध होने तथा यहाँ मौजूद नैसर्गिक सौंदर्य के कारण पर्यटक इसकी ओर सहज रूप से आकृष्ट होते हैं।

बीसलपुर बांध परिसर के प्रमुख पर्यटन आकर्षण

पर्यटन विकास के दृष्टिकोण बीसलपुर बांध परिसर में शोधकर्त्ताओं द्वारा जिन स्थलों का चयन किया गया है, वे अग्रलिखित हैं।

बीसलपुर बांध

यह बांध अरावली की सुरम्य एवं हरी-भरी पहाड़ियों के बीच प्रवाहित नदीतमा बनास पर निर्मित है। यह जयपुर से दक्षिण दिशा में 160 किमी. की दूरी पर स्थित है। रेलमार्ग से योजित न होने के कारण यहाँ रेल द्वारा नहीं पहुँचा जा सकता है, किन्तु सड़क मार्ग द्वारा यहाँ पहुँचा जा सकता है। यह जयपुर-कोटा राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 52 पर स्थित है (गुप्ता एवं सर्राफ, 2026)। यह बांध किसी विशाल समुद्र सा प्रतीत होता है एवं आकाशीय चित्र लेने पर विशाल नीले मोती के समान दिखाई देता है। यह बांध आमतौर पर सालों-साल जल से लबालब भरा होता है किन्तु वर्षा काल में इसमें अतिरिक्त जल-भराव से इसका आकर्षण और भी अधिक बढ़ जाता है। इस बांध में बड़े स्तर पर मत्स्यन का कार्य किया जाता है। यहाँ पर्यटकों को स्थानीय ग्रामीणों द्वारा बोटिंग की सुविधा प्रदान की जाती है जो कि उनके लिए स्वरोजगार का एक महत्त्वपूर्ण स्रोत है। पर्यटन के लिए यहाँ आने का आदर्श समय वर्षाकाल एवं शीतकाल का होता है। शीतकाल में अब यहाँ विदेशी पक्षी (साइबेरियन क्रेन) भी प्रणय क्रिया हेतु आने लगे हैं।

बीसलपुर कंजर्वेशन रिजर्व

बीसलपुर बांध ने टोंक क्षेत्र में ईको पर्यटन की प्रचुर संभवनाओं को जन्म दिया है। बांध के समीपवर्ती क्षेत्र में स्थिन वनों में उपलब्ध वन्यजीवों के संरक्षण हेतु राज्य सरकार द्वारा यहाँ 4830 हेक्टेयर क्षेत्रफल के एक कंजर्वेशन रिजर्व की स्थापना की गई है जिसे 'बीसलपुर कंजर्वेशन रिजर्व' नाम से जाना जाता है (वन विभाग, राजस्थान सरकार, 2008)। इस रिजर्व में जरख, सियार, सेही, अजगर, भारतीय कोबरा, खरगोश, जंगली शूकर, काले हिरण, भारतीय लोमड़ी, सांभर, नील गाय, पैंथर और घड़ियाल आदि वन्यजीव मौजूद हैं जिन्हें निकट से देखने के लिए आस-पास के क्षेत्रों से पर्यटक यहाँ आया करते हैं। इस प्रकार कहा जा सकता है कि यह रिजर्व विगत कुछ वर्षों में ईको पर्यटन साइट के रूप में उभरा है। ईको पर्यटन प्रकृति-आधारित पर्यटन का एक टिकाऊ एवं गैर-आक्रामक स्वरूप है जो कि मुख्य रूप से प्रकृति के प्राथमिक रूप को बनाए रखते हुए स्थानीय पर्यटन संबन्धी गतिविधियों को संचालित करने पर बल प्रदान करता है। यह विशुद्ध रूप से प्रकृति के नैतिकता आधारित संरक्षण पर केन्द्रित है (फैनेल 2008, पृ. सं. 24)।

फिश एक्वेरियम

राजस्थान सरकार द्वारा मत्स्यन को बढ़ावा देने तथा इस गतिविधि को व्यवस्थित करने के उद्देश्य से बीसलपुर बांध परियोजना के अंतर्गत देवली, टोंक में एक मत्स्य विकास कार्यालय खोला गया है (मत्स्य विभाग, राजस्थान, 2020, पृ. 04)। मुख्य रूप से यह एक मछली प्रजनन केन्द्र है जिसका शिलान्यास दिनांक 31 अक्टूबर 2015 को मत्स्य विभाग, राजस्थान सरकार द्वारा किया गया था (शिलापट्ट पर प्रदर्शित जानकारी, फिश एक्वेरियम, बीसलपुर बांध, देवली, जिला टोंक)। इसकी कुल निर्माण लागत 154.66 लाख रुपए है। इस एक्वेरियम में बटरफ्लाई, ग्रांडमदर,

लॉयन, क्लावन, ऊस्टर, टाइगर, सिम्फीसारन, मोरिस तथा डिसकस जैसी विदेशी मछलियाँ को रखा गया है। यहाँ इनकी प्राकृतिक एवं आर्टिफीशियल ब्रीडिंग कराई जाती है। यह केन्द्र पर्यटकों के लिए विशेष आकर्षण का केन्द्र है जहाँ वे इसमें बने विशाल एक्वेरियम में मछलियों की अटखेलियों को देखने का आनन्द लेते हैं।

गोकर्णेश्वर मंदिर

यह बीसलपुर बांध परिसर, टोंक में स्थित एक प्राचीन मंदिर है जिसका निर्माण 12वीं सदी में चौहान शासक विग्रहराज-चतुर्थ के कार्यकाल में करवाया गया था अतः इस मंदिर को 'बीसलदेव का मंदिर' भी कहा जाता है (जिला प्रशासन टोंक, 2025)। इस मंदिर में भगवान शिव के गोकर्णेश्वर स्वरूपी शिवलिंग की स्थापना की गई है। यह मंदिर भूमिज शैली में निर्मित है जिसके केन्द्र एक ऊँचा शिखर तथा कुल 52 अलंकृत स्तंभ हैं। यह मंदिर उस समय की अद्भुत कारीगरी एवं वास्तुकला का परिचायक है। इसके निर्माण में चूने का कहीं कोई प्रयोग नहीं किया गया है बल्कि पत्थर को पत्थर से जोड़कर अद्भुत एवं आकर्षक रूप से इसे बनाया गया है। इसका आज भी अपने मूल स्वरूप में दिखाई पड़ना इसके मजबूत निर्माण को बताता है। मंदिर के प्रवेश द्वार तथा स्तंभों पर यक्ष-यक्षिणी की मनोहारी मूर्तियाँ उकेरी गई हैं। हालांकि इनमें से अधिकांश मूर्तियाँ मुस्लिम आक्रांताओं द्वारा खण्डित की जा चुकी हैं (विभिन्न ऐतिहासिक साक्ष्यों के आधार पर)। इन स्तंभों पर शिलालेख भी दिखाई पड़ते हैं जिनके अध्ययन से मंदिर निर्माण के संबन्ध में जानकारी प्राप्त होती है। यहाँ श्रावण मास में श्रद्धालुओं की भीड़ आम दिनों की तुलना में अधिक जुटती है। शिवरात्रि के दिन यहाँ विशाल मेले का आयोजन किया जाता है। वर्षा ऋतु में बीसलपुर बांध जब पूरा भर जाता है तो उसका पानी इस मंदिर में आने लग जाता है और इस कारण वर्षा ऋतु में इसे श्रद्धालुओं के लिए बंद कर दिया जाता है।

मिनी गोवा

यह बीसलपुर बांध परिसर के डूब क्षेत्र में शामिल थडोली ग्राम में स्थित है। यहाँ का नैसर्गिक सौंदर्य हू-ब-हू गोआ के जैसा है। यही कारण है कि इसे मिनी गोआ की संज्ञा प्रदान की गई है। यहाँ सूर्योदय एवं सूर्यास्त का नजारा देखते ही बनता है। यहाँ भी गोवा के समान ही नारियल के खेत विकसित किए गए हैं तथा प्राकृतिक रूप से रेत के तट बने हुए हैं (शर्मा, 2023)। यहाँ जल की सतह से आती शीतल हवा समद्री हवा का अहसास कराती है। यहाँ का शांत वातावरण शहरी चकाचौंध एवं भागदौड़ भरी जिन्दगी से त्रस्त लोगों असीम शांति प्रदान करता है। वर्तमान में यह एक उभरता हुआ पर्यटन स्थल है जो कि मानसून के समय पिकनिक और बोटिंग के लिए एक बेहतरीन स्थान है।

समस्या एवं सुझाव

शोधकर्त्ताओं द्वारा अवलोकन एवं साक्षात्कार विधि को आधार बनाकर बीसलपुर बांध परिसर में पर्यटन विकास के मार्ग मौजूदा चुनौतियों एवं उनके संभावित समाधानों हेतु व्यावहारिक सुझाव दिए गए हैं, जो कि अग्रवर्णित हैं।

पर्यटन के दृष्टिकोण से उपयोगिता की अवहेलना

यह सत्य है कि बीसलपुर बांध परियोजना का निर्माण विशुद्धतः पेयजल एवं सिंचाई व्यवस्था के लिए किया गया है किन्तु सरकार एवं प्रशासन द्वारा पर्यटन के दृष्टिकोण से इसकी उपयोगिता पर कभी ध्यान ही नहीं दिया गया है। हमारे देश में ऐसे कई बांध हैं जिनका उपयोग पर्यटन गतिविधियों के लिए सफलतापूर्वक किया जा रहा है, उदाहरणार्थ-सरदार सरोवर बांध, (गुजरात), टिहरी बांध (उत्तराखण्ड) एवं गांधी सागर बांध (मध्यप्रदेश) में पर्यटन का उन्नत एवं व्यवस्थित स्वरूप दिखाई देता है। इन्हीं बांधों की तर्ज पर बीसलपुर बांध परिसर में भी पर्यटन विकास को लेकर राज्य सरकार द्वारा रणनीति एवं कार्य योजना के निर्माण की पहल की जा सकती है।

कैमल सफारी

टोंक जिले में पशुपालन के अंतर्गत ऊँट पालन का कार्य बड़े स्तर पर किया जाता है। यह पशुपालकों के लिए आर्थिक सुरक्षा का आधार है। इनके बालों का इस्तेमाल नमदा उद्योग में किया जाता है। नमदा एक प्रकार का कालीन है जिसे टोंक जिले में व्यापक स्तर पर बनाया जाता है। नमदा का निर्यात यूरोपीय देशों को भी किया जाता है। ऊँटनी का दूध जिंक की अधिक मात्रा के कारण साधारण दूध की तुलना में अधिक गुणकारी होता है। यही कारण है कि ऊँटनी के दूध की बाजार मांग अधिक है। इन सबके अलावा ऊँट एक ऐसा पशु है जो कि देशी-विदेशी पर्यटकों को विशेष रूप से प्रिय होता है। बीसलपुर बांध क्षेत्र में आए पर्यटकों को इन ऊँटों के प्रयोग से कैमल सफारी का आनन्द प्रदान कराया जा सकता है। इस प्रकार कैमल सफारी से न सिर्फ स्थानीय पशुपालकों के लिए अतिरिक्त आय सृजित हो सकेगी बल्कि इससे विदेशी मुद्रा में भी बढ़ौतरी संभव हो सकेगी।

शॉपिंग साइट्स एवं कलामंचों का विकास

बीसलपुर बांध क्षेत्र में स्थानीय व्यवसायियों को अपने हस्तशिल्प उत्पादों जैसे नमदा आदि के विक्रय तथा कलाकारों को अपनी कला जैसे टोंक की प्रसिद्ध एवं चार सौ साल पुरानी चारबैत लोक गायन शैली के प्रदर्शन हेतु कलामंच प्रदान कर पर्यटन को बढ़ावा दिया जा सकता है। इससे न केवल व्यवसायियों एवं कलाकारों को आर्थिक संबल प्रदान हो सकेगा बल्कि पर्यटन को भी नवीन स्वरूप प्रदान होने से उसका विकास संभव हो सकेगा। खास तौर पर विदेशी मेहमानों को बीसलपुर बांध परिसर में भ्रमण कराने के दौरान उन्हें यहाँ शॉपिंग का आनन्द प्रदान कराया जा सकता है।

फिल्मांकन

राज्य सरकार के प्रयासों से बीसलपुर बांध क्षेत्र को आम जन के लिए फोटोशूट व वीडियोशूट तथा प्रीवैडिंग एवं फिल्मों की शूटिंग आदि के लिए सशुल्क खोला जा सकता है। इससे अतिरिक्त आय का सृजन संभव हो सकेगा।

बर्ड आई व्यू

बीसलपुर बांध क्षेत्र में एक ऐसे ऊँचे प्लेटफॉर्म का निर्माण किया जा सकता है जहाँ से इस बांध का विहंगम दृश्य पर्यटकों को दिखाया जा सके। गुजरात के केवड़िया में सरदार पटेल की प्रतिमा (स्टेच्यू ऑफ़ यूनिटी) इस उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल रही है। ऐसा ही प्रयोग बीसलपुर बांध क्षेत्र में भी किया जा सकता है।

वॉटर स्पोर्ट्स

बीसलपुर बांध में पर्यटकों को रोमांच का अनुभव कराने के लिए वॉटर स्पोर्ट्स एक्टीविटीज़ प्रदान कराई जा सकती है जैसे-क्याकिंग, वॉटर स्कीइंग, बनाना बोट राइड्स, बंपर राइड्स, रोइंग, जैट स्कीइंग आदि। इन एक्टीविटीज़ से न सिर्फ पर्यटकों की संख्या में इजाफा होगा अपितु स्थानीय लोगों एवं सरकार की आय में भी बढ़ौतरी संभव हो सकेगी। हालांकि यहाँ वर्तमान में केवल नौकायन की ही सुविधा उपलब्ध है।

पर्यटन कॉरिडोर

बीसलपुर में पर्यटकों की संख्या एवं आवाजाही को बढ़ाने के उद्देश्य से इसे पर्यटन विभाग द्वारा निर्धारित पर्यटन कॉरिडोर में शामिल किया जा सकता है जो कि अब तक नहीं है। आमतौर पर पर्यटक जयपुर एवं सवाई माधोपुर तक ही आकर पुनः चले जाते हैं। जयपुर एवं सवाई माधोपुर में बांध पर्यटन अथवा उसके समकक्ष पर्यटन की कोई सुविधा उपलब्ध नहीं है। ऐसे में यदि बीसलपुर को भी इसी कॉरिडोर में शामिल किया जाता है तो पर्यटकों को एक नवीन पर्यटन स्थल का अनुभव प्रदान किया सकता है।

होटल्स एवं होम-स्टे

अमुक पर्यटक से किए गए साक्षात्कार से प्राप्त जानकारी के अनुसार बीसलपुर बांध परिसर के निकट पर्यटन पर केन्द्रित होटलों एवं होम-स्टे की सुविधा लगभग न के समान है। साक्षात्कार के अनुसार यह भी एक कारण है कि बीसलपुर बांध में पर्यटन का दैनिक स्वरूप ही दिखाई पड़ता है जिसके चलते पर्यटक यहाँ ठहराव नहीं करता है और दिन में पर्यटन कर शाम तक पुनः अपने स्थान को लौट जाता है। पर्यटकों के ठहराव को सुनिश्चित करने हेतु बीसलपुर बांध परिसर में पर्यटन संबन्धी गतिविधियों को बढ़ाने के साथ-साथ होटलों को पर्यटन अनुकूल बनाने पर जोर दिए जाने की आवश्यकता है। इसके अतिरिक्त वर्तमान में देश के विभिन्न पर्यटन स्थलों पर होम स्टे की भी काफी माँग है। ऐसे में स्थानीय लोगों को के सहयोग से उनके निवास स्थानों को होम-स्टे में परिवर्धित कर पर्यटकों के ठहराव को सुनिश्चित किया जा सकता है और साथ-ही-साथ उनके लिए अतिरिक्त आय का भी उपबन्ध किया जा सकता है।

स्थानीय गाइड

बीसलपुर बांध परिसर तथा उसके आस-पास के स्थानों से पर्यटकों को रूबरू कराने के लिए राज्य सरकार के प्रयासों से संबन्धित संस्थानों में स्थानीय युवक-युवतियों को गाइड बनने हेतु प्रशिक्षण दिलाया जा सकता है। योग्यता प्राप्त कर लेने के उपरान्त वे स्वरोजगार के लिए प्रेरित हो सकेंगे, पर्यटकों को बेहतर ढंग से सुविधा प्रदान कर सकेंगे तथा स्वयं की आय भी सुरक्षित कर सकेंगे।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि वर्तमान में बीसलपुर बांध परिसर में पर्यटन का जो स्वरूप दिखाई पड़ता है उसे सहकारी एवं गैर-नियोजित स्वरूप कहा जा सकता है। इसका अभिप्राय यह हुआ कि यहाँ स्थानीय लोगों के सहयोग से, स्थानीय अवसरों का लाभ लेते हुए तथा स्थानीय लोगों के लिए पर्यटन गतिविधि का संचालन किया जा रहा है। हालांकि अभी इसके विकास में सरकार एवं प्रशासनिक अधिकारियों का योगदान लगभग न के बराबर ही रहा है। यहाँ संचालित पर्यटन गतिविधियों में सरकार का प्रत्यक्ष रूप से कोई दखल नहीं होने के कारण इसका सीधा लाभ सरकार तक न पहुँचकर पर्यटन में संलग्न स्थानीय लोगों तक ही पहुँच रहा है। हालांकि अभी यह लाभ इतना नहीं हो रहा है कि इसका आकलन किया जा सके किन्तु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि बीसलपुर बांध परिसर निकट भविष्य में राजस्थान के एक महत्त्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में अपनी पहचार स्थापित कर सकेगा।

संदर्भ सूची

कृषि विभाग, राजस्थान सरकार। टोंक जिले के लिए जिला सिंचाई योजना (डीआईपी) (प्रधान मंत्री कृषि सिंचाई योजना पीएमकेएसवाई) (पृ. 11)

गुप्ता, वी., एवं सर्राफ, आर. (2026)। डिटर्मिनेशन ऑफ़ हैवी मैटल्स इन ड्रिंकिंग वॉटर कलेक्टेड फ्रॉफ डिफ्रेंट साइट्स ऑफ़ बीसलपुर डैम ड्यूरिंग डिफ्रेंट सीजन्स। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ़ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट, 13(1), 61–64. https://www.allsubjectjournal.com

जिला प्रशासन टोंक. (2025)। जिला आपदा प्रबंधन योजना टोंक, 2025-26 (पृ. 14)। राजस्थान सरकार। https://dmrelief.rajasthan.gov.in/content/dam/dmr/files/documents/ddmp2025/Tonk.pdf प्रजापत, ए. (2026, अप्रैल 3).

टोंक में बीसलपुर दह पर बनेगा झूलता ब्रिज, 99 करोड़ आएगी लागत; श्रद्धालु-पर्यटकों को होगा बड़ा फायदा. राजस्थान पत्रिका. https://www.patrika.com/tonk-news/suspension-bridge-will-be-constructed-over-the-bisalpur-dam-at-a-cost-of-99-crore-20471418

फेनेल, डी. ए. (2008)। इकोटूरिज्म (तीसरा संस्करण)। रूटलेज।

माली, एच. (2025) बीसलपुर सिंचाई परियोजना की प्रगति एवं सफलताओं का भौगोलिक विश्लेषण। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रिएटिव रिसर्च थॉट्स, 13(11), एफ490-एफ496। https://ijcrt.org/papers/IJCRT2511648.pdf

मत्स्य विभाग, राजस्थान. (2020). वार्षिक रिपोर्ट, 2019-20

वन विभाग, राजस्थान सरकार (2008, 23 अक्टूबर), राजस्थान राजपत्र में अधिसूचना (आर.एन.आई. नं. राज बिल / 2000 / 1717)।

राजस्थान पर्यटन विभाग (1989)। अधिसूचना संख्याः F.12(4)/Ind/I/85: डिक्लेरेशन ऑफ टूरिज्म एज़ एन इंडस्ट्री (मार्च 04), राजस्थान सरकार।

शर्मा, एम. (2023, सितंबर 02)। एग्रो ट्यूरिज्मः बीसलपुर बन रहा 'मिनी गोवा', नारियल की हो रही पैदावार बलुई रेत में (समाचार लेख)। राजस्थान पत्रिका. https://www.patrika.com/jaipur-news